

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 3: यमराज का अपने दूतों को उपदेश

13 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



जब उनके अपने दूत पराजित होकर लौटते हैं, तब मृत्यु के स्वामी क्रोध नहीं करते — वे हाथ जोड़ते हैं, भगवान् के चरणों का ध्यान करते हैं, और सबसे गूढ़ रहस्य सिखाते हैं: कि प्रत्येक नियम से ऊपर भगवान् के प्रति प्रेममयी भक्ति है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। यह सुनकर कि किस प्रकार भगवान् विष्णु के दूतों ने अजामिल को बचाने के लिए स्वयं मृत्यु के अधिकार को उलट दिया, राजा परीक्षित स्वाभाविक ही सोचते हैं: जब यमराज के अपने दूत पराजित होकर लौटे, तब धर्म के महान् स्वामी यम ने क्या कहा? यह तीसरा अध्याय उसी का उत्तर देता है

— और वह विस्मयकारी है। क्रोध करने के स्थान पर यम इस समाचार को प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करते हैं, भगवान् के चरणों का ध्यान करते हैं, और अपने दूतों को समस्त भागवत की सर्वाधिक मूल्यवान शिक्षाओं में से एक प्रदान करते हैं। वे स्वीकारते हैं कि वे परम अधिकारी नहीं हैं; वे सच्चे धर्म के दुर्लभ ज्ञाताओं को नामित करते हैं; वे घोषित करते हैं कि भगवान् के नाम के कीर्तन से जाग्रत प्रेममयी भक्ति ही समस्त कर्तव्यों से श्रेष्ठ है; और वे कोमलता से अपने दूतों को आदेश देते हैं कि वे भगवान् की शरण में आए लोगों के निकट फिर कभी न जाएँ।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 3 (तृतीय अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: यमराज का अपने दूतों को उपदेश
- मुख्य वक्ता: यमराज (अपने दूतों को उपदेश देते हुए); उनके दूत (वृत्तांत सुनाते और प्रश्न करते हुए); और श्रीशुकदेव, राजा परीक्षित को सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: यमराज के दूत; राजा परीक्षित; और बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: संयमनी, यमराज की राजधानी; बाह्य कथा गंगा-तट पर रहती है जहाँ परीक्षित सुन रहे हैं
- केन्द्रीय विषय: यम द्वारा भगवान् की सर्वोच्चता की स्वीकृति, सच्चे धर्मज्ञों का वर्णन, और यह उपदेश कि भगवन्नाम से भक्ति ही परम कर्तव्य है तथा भक्तों के निकट दण्ड के लिए कभी नहीं जाना चाहिए
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 1-35
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

मृत्यु के अधिकार पर एक प्रश्न

राजा परीक्षित अध्याय का आरम्भ उसी प्रश्न से करते हैं जो प्रत्येक श्रोता के मन में पहले से है। समस्त सृष्टि यम के अधीन है, और उनके अधिकार में अभी-अभी खुले रूप से बाधा पड़ी थी — तो जब उनके दूतों ने भगवान् के दूतों के हाथों अपनी पराजय का वृत्तांत सुनाया, तब दण्ड के महान् स्वामी ने क्या कहा? ऐसी बात, परीक्षित कहते हैं, पहले कभी सुनी नहीं गई, और केवल श्रीशुकदेव ही इससे उठे संशय का समाधान कर सकते हैं (श्लोक 1-2)।

श्रीशुकदेव बताते हैं कि यम के दूतों ने, अपने प्रयास में बाधा पड़ने पर, संयमनी में अपने स्वामी को अपना वृत्तांत निवेदित किया (श्लोक 3)। उन्होंने उनसे एक गहन दार्शनिक प्रश्न किया। यदि संसार में कर्मफल देने वाले अनेक शासक हों, उन्होंने तर्क किया, तो विरोधाभास उठ खड़े होंगे — एक जहाँ दण्ड दे, वहीं दूसरा क्षमा कर दे। अतः, उन्होंने निष्कर्ष निकाला, यम ही समस्त प्राणियों के एकमात्र परम शासक होंगे, जो पुण्य को पाप से पृथक् कर सकते हैं और दण्ड का दण्ड धारण करते हैं (श्लोक 4-7)। किन्तु वही अधिकार, उन्होंने कहा, आज व्यर्थ कर दिया गया: चार अद्भुत पुरुषों ने उनके पाश काट दिए और एक पापी को उसी क्षण बलपूर्वक मुक्त कर दिया जब उसने “नारायण” शब्द उच्चारित किया। उन्होंने जानना चाहा कि वे पुरुष कौन थे (श्लोक 8-10)।



यमराज के दूत संयमनी लौटकर अपने स्वामी को बताते हैं कि किस प्रकार चार तेजस्वी पुरुषों ने "नारायण" नाम के उच्चारण मात्र से एक पापी को मुक्त कर दिया (श्लोक 1-10)।

यम की स्वीकृति: एक परमेश्वर

इस प्रकार पूछे जाने पर, महान् यम — प्राणियों के नियन्ता — प्रसन्न हुए, और श्रीहरि के चरण-कमलों का चिन्तन करते हुए उन्होंने उत्तर दिया (श्लोक 11)। उनका उत्तर एक ऐसी विनम्र स्वीकृति से आरम्भ हुआ जिसे परम्परा आज तक नहीं भूली:

यम उवाच

परो मदन्यो जगतस्तस्थुषश्च

ओतं प्रोतं पटवद्यत्र विश्वम् ।

यदंशतोऽस्य स्थितिजन्मनाशा

नस्योतवद्यस्य वशे च लोकः ॥ १२ ॥

yama uvāca paro mad-anyo jagatas tasthuṣaś ca otaṁ protaṁ paṭavad yatra viśvam yad-aṁśato 'sya sthiti-janma-nāśā nasy otavad yasya vaśe ca lokah

अर्थ: यमराज ने कहा: मुझसे तथा इस चराचर सृष्टि के अन्य समस्त रक्षकों से भिन्न एक परमेश्वर हैं, जिनमें यह सम्पूर्ण विश्व वस्त्र के ताने-बाने के समान ओत-प्रोत बुना हुआ है; उन्हीं के एक अंश से इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होते हैं, और समस्त प्राणी उनके वश में हैं, जैसे बैल नथ में पिरोई रस्सी से वश में रहता है। (स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 12)

जैसे किसान अपने बैलों को नथों में डाली रस्सियों से बाँधता है, यम ने आगे कहा, वैसे ही भगवान् अपने ही वचन, वेद, में विहित वर्णों तथा कर्तव्यों के द्वारा मानव समाज के प्रत्येक वर्ग को बाँधते हैं, और उन्हीं के भय से प्रत्येक वर्ग अपने-अपने कर्मों के अनुसार उन्हें अर्पण करता है (श्लोक 13)।

तब यम ने ब्रह्माण्ड के महान् रक्षकों को नामित किया — स्वयं को, इन्द्र, निऋति, वरुण, चन्द्रदेव, अग्निदेव, भगवान् शिव, वायुदेव, सूर्यदेव, ब्रह्मा, अदिति के पुत्रों, विश्वेदेवों, वसुओं, साध्यों, मरुतों, रुद्रों, सिद्धों, और भृगु जैसे सृष्टिकर्ताओं को — और स्वीकार किया कि ये उन्नत प्राणी भी, जिनमें सत्त्व की प्रधानता है, भगवान् की माया से आवृत होने के कारण उनके अभिप्राय को नहीं जान पाते (श्लोक 14-15)। जैसे रंग उस दृष्टि-शक्ति को नहीं देख सकते जो उन्हें प्रकट करती है, वैसे ही देहधारी जीव इन्द्रियों, मन या वाणी से उस एक को नहीं ग्रहण कर सकता जो सबका द्रष्टा है और प्रत्येक हृदय में निवास करता है (श्लोक 16)। भगवान् के मनोहर दूत, उन्होंने समझाया, संसार में विचरण करते हुए उनके भक्तों की शत्रुओं से, सबसे — और स्वयं मृत्यु से भी — रक्षा करते हैं (श्लोक 17-18)।



यमराज सिखाते हैं कि एक ही परमेश्वर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त और उसका नियन्ता है, और उनकी माया से आवृत बड़े-बड़े लोकपाल भी उनकी इच्छा को नहीं जान पाते (श्लोक 12-18)।

सच्चे धर्म को जानने वाले बारह

तब यम अपनी शिक्षा के मर्म पर आए। सच्चा धर्म, उन्होंने कहा, साक्षात् भगवान् द्वारा प्रणीत है, और वह इतना सूक्ष्म है कि न ऋषि, न देव, न प्रमुख सिद्ध उसे यथार्थतः जान सकते हैं — फिर असुर, मनुष्य, या विद्याधर-चारण आदि की तो बात ही क्या।

धर्मं तु साक्षाद्भगवत्प्रणीतं
न वै विदुर्ऋषयो नापि देवाः ।
न सिद्धमुख्या असुरा मनुष्याः
कुतो नु विद्याधरचारणादयः ॥ १९ ॥

dharmam tu sākṣād bhagavat-praṇītaṁ na vai vidur ṛṣayo nāpi devāḥ na siddha-mukhyā asurā manuṣyāḥ kuto nu vidyādhara-cāraṇādayaḥ

अर्थ: सच्चा धर्म साक्षात् परमेश्वर द्वारा प्रणीत है। उसे न ऋषि, न देवगण, न प्रमुख सिद्ध ही यथार्थतः जानते हैं — तो फिर असुर, साधारण मनुष्य, या विद्याधर एवं चारण उसे कैसे जान सकते हैं? (स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 19)

तब यम ने उन बारह महान् अधिकारियों को नामित किया जो अकेले इस गुह्य धर्म को समझते हैं — यह सूची तब से बारह महाजनों, भक्ति के ध्वजवाहकों, के रूप में पूजित रही है।

स्वयम्भूर्नारदः शम्भुः कुमारः कपिलो मनुः ।

प्रह्लादो जनको भीष्मो बलिवैयासकिर्वयम् ॥ २० ॥

द्वादशैते विजानीमो धर्मं भागवतं भटाः ।

गुह्यं विशुद्धं दुर्बोधं यं ज्ञात्वामृतमश्नुते ॥ २१ ॥

*svayambhūr nāradaḥ śambhuḥ kumāraḥ kapilo manuḥ prahlādo janako bhīṣmo balir vaiyāsakir
vayam dvādaśaite vijānīmo dharmam bhāgavataṁ bhaṭāḥ guhyaṁ viśuddham durbodham yaṁ
jñātvāmṛtam aśnute*

अर्थ: स्वयम्भू ब्रह्मा, नारद, भगवान् शिव, सनत्कुमार, कपिल, मनु, प्रह्लाद, जनक, भीष्म, बलि, शुक (व्यासपुत्र शुकदेव), और मैं — हम बारह उस गुह्य, विशुद्ध एवं दुर्बोध भक्ति-धर्म को जानते हैं, जिसे जानकर मनुष्य अमरत्व प्राप्त करता है। (स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 20-21)



यमराज बारह महान् अधिकारियों को नामित करते हैं — ब्रह्मा, नारद, शिव, सनत्कुमार, कपिल, मनु, प्रह्लाद, जनक, भीष्म, बलि, शुकदेव और स्वयं यम — जो अकेले भक्ति के गूढ़ धर्म को जानते हैं (श्लोक 20-21)।

परम कर्तव्य और नाम की महिमा

इसी से यम ने वह व्यावहारिक निष्कर्ष निकाला जो इस अध्याय का शिरोमणि है। संसार में सब मनुष्यों का परम कर्तव्य, उन्होंने घोषित किया, भगवान् के प्रति प्रेममयी भक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं, जो उनके नाम के कीर्तन आदि के द्वारा व्यक्त होती है।

एतावानेव लोकेऽस्मिन् पुंसां धर्मः परः स्मृतः ।
भक्तियोगो भगवति तन्नामग्रहणादिभिः ॥ २२ ॥

etāvān eva loke 'smin puṁsāṁ dharmah paraḥ smṛtaḥ bhakti-yogo bhagavati tan-nāma-grahaṇādibhiḥ

अर्थ: इस संसार में सब मनुष्यों का यही परम धर्म कहा गया है: भगवान् के नाम के कीर्तन आदि साधनों से की गई उनकी भक्ति-सेवा। (स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 22)

तब स्नेह से अपने दूतों की ओर मुड़कर — उन्हें “मेरे बच्चो” कहकर — यम ने उनसे भगवन्नाम-कीर्तन की उस अद्भुत महिमा को देखने के लिए कहा जिसने घोर पापी अजामिल तक को मृत्यु के दूतों की पकड़ से छुड़ा दिया।

नामोच्चारणमाहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः ।
अजामिलोऽपि येनैव मृत्युपाशादमुच्यत ॥ २३ ॥

nāmoccāraṇa-māhātmyaṁ hareḥ paśyata putrakāḥ ajāmilo 'pi yenaiva mṛtyu-pāśād amucyata

अर्थ: हे मेरे बच्चो, श्रीहरि के नाम के उच्चारण की उस महिमा को देखो, जिससे अजामिल भी मृत्यु के पाश से मुक्त हो गया। (स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 23)

अपने पुत्र को ही लक्ष्य कर, पूरे स्वर से “नारायण” पुकारने मात्र से — और वह भी तब जब मृत्यु के क्षण में उसका शरीर और मन क्षीण हो रहे थे — अजामिल ने मुक्ति पा ली। यह एक घटना ही, यम ने घोषित किया, सदा के लिए इस विषय का निर्णय कर देती है:

एतावतालमघनिर्हरणाय पुंसां
सङ्कीर्तनं भगवतो गुणकर्मनाम्नाम् ।
विक्रुश्य पुत्रमघवान् यदजामिलोऽपि
नारायणेति म्रियमाण इयाय मुक्तिम् ॥ २४ ॥

etāvatālam agha-nirharaṇāya puṁsāṁ saṅkīrtanaṁ bhagavato guṇa-karma-nāmnām vikruśya putram aghavān yad ajāmilo 'pi nārāyaṇeti mriyamāṇa iyāya muktim

अर्थ: मनुष्य के समस्त पापों को नष्ट करने के लिए इतना ही पर्याप्त है: भगवान् के पवित्र नाम, गुण तथा लीलाओं का कीर्तन। अजामिल, महापापी होते हुए भी, केवल अपने पुत्र को पुकार रहा था — फिर भी मरते समय उसके मुख पर “नारायण” शब्द होने मात्र से उसे मुक्ति मिल गई। (स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 24)

खेद है, यम ने कहा, कि माया से मोहित और वेदों के कर्मकाण्डी वचनों में लीन साधारण पण्डित प्रायः नाम की इस महिमा को नहीं पहचानता और विस्तृत यज्ञों में ही व्यस्त रहता है (श्लोक 25)।



यमराज अपने दूतों को स्नेहपूर्वक सिखाते हैं कि भगवन्नाम से भक्ति ही परम धर्म है, और अजामिल की अनजाने पुकार ने भी उसे मुक्ति दिला दी (श्लोक 22-25)।

भगवान् के भक्तों के निकट कभी न जाओ

यम का अन्तिम आदेश उनका सर्वाधिक कोमल भी था। मेरे पास लाओ, उन्होंने कहा, केवल उन कठोर आत्माओं को जो कभी भगवान् के गुणों का वर्णन नहीं करतीं, कभी उनका नाम नहीं उच्चारतीं, कभी श्रीकृष्ण को सिर नहीं झुकातीं, और कभी उनकी कोई सेवा नहीं करतीं — जिन्होंने अपने हृदय पूर्णतः घर के क्षणभंगुर सुखों को अर्पित कर दिए और भगवान् के चरणों की मधुरता से मुख मोड़ लिया (श्लोक 28-29)। किन्तु उनके निकट कभी न जाओ जो भगवान् की शरण में आ गए हैं, यम ने श्रद्धापूर्ण स्वर में आदेश दिया:

ते देवसिद्धपरिगीतपवित्रगाथा

ये साधवः समदृशो भगवत्प्रपन्नाः ।

तान्नोपसीदत हरेर्गदयाभिगुप्तान्

नैषां वयं न च वयः प्रभवाम दण्डे ॥ २७ ॥

*te deva-siddha-parigīta-pavitra-gāthā ye sādhaḥ samadṛśo bhagavat-prapannāḥ tāt
nopasīdata harer gadayābhiguptān naiṣāṁ vyaṁ na ca vayaḥ prabhavāma daṇḍe*

अर्थ: ऐसे साधु पुरुषों के निकट मत जाओ — जो सबको समान दृष्टि से देखते हैं, जिन्होंने भगवान् की शरण ग्रहण कर ली है, और जिनकी पवित्र कथा स्वयं देवता तथा सिद्धगण गाते हैं — क्योंकि श्रीहरि की गदा स्वयं उनकी रक्षा करती है, और न मुझमें, न काल में उन्हें दण्ड देने का सामर्थ्य है। (स्कन्ध 6, अध्याय 3, श्लोक 27)

इस अध्याय का सबसे गूढ़ रहस्य यहीं छिपा है। कुछ ही श्लोक पूर्व यम ने स्वयं बताया था कि किस प्रकार परमेश्वर राजाओं, ऋषियों, यहाँ तक कि लोकपालों को भी कर्तव्य और कर्मफल के बन्धन में पिरोते हैं (श्लोक 12-13)। किन्तु वही यम, जो इस सार्वभौमिक नियम का संचालन करते हैं, अब स्वीकार करते हैं कि शरणागत भक्त पर उनका कोई अधिकार नहीं रह जाता। भक्ति कर्मफल की तराजू पर तौला जाने वाला एक

और पुण्य-कर्म नहीं है; वह प्रेम का ऐसा बन्धन है जो आत्मा को नियम की पहुँच से सर्वथा परे ले जाता है। यही कारण है कि धर्म के नियुक्त रक्षक यम, अजामिल पर कोई अधिकार जताने के बजाय हाथ जोड़कर क्षमा माँगते हैं — भगवान् का शरणागत सेवक प्रेम के प्रति उत्तरदायी है, पाप-पुण्य की बहीखाता-वृत्ति के प्रति नहीं।

तब, अद्भुत विनम्रता के साथ, यम ने हाथ जोड़कर भगवान् नारायण से प्रार्थना की कि उनके अज्ञानी दूतों ने भगवान् के भक्त के विरुद्ध जो अपराध किया, उसे क्षमा करें, क्योंकि क्षमा ही, उन्होंने कहा, महानों में महान् को शोभा देती है (श्लोक 30)।

उन्होंने अपने दूतों को — और उनके माध्यम से समस्त संसार को — यह बताकर अपने उपदेश की पुष्टि की कि भगवान् विष्णु के नामों तथा गुणों का कीर्तन सम्पूर्ण जगत् के लिए मंगल है और महानतम पापों का भी पूर्ण प्रायश्चित्त है; कि मन उपवास से इतना शुद्ध नहीं होता जितना उस भक्ति से जो भगवान् की लीलाओं को बार-बार सुनने और सुनाने से उत्पन्न होती है; और कि जो कृष्ण के चरणों की मधुरता चख लेता है वह माया के सुखों की फिर लालसा नहीं करता, जबकि जो नहीं चखता वह केवल ऐसे कर्मों से प्रायश्चित्त करता है जो पुनः पाप की ओर ले जाते हैं (श्लोक 31-33)। यह सब सुनकर यम के दूत भगवान् के भक्तों के प्रति श्रद्धामय भय से भर गए, और उस क्षण से वे उन्हें देखने में भी काँपने लगे (श्लोक 34)। यह परम गुह्य कथा, श्रीशुकदेव कहते हैं, सर्वप्रथम मलय पर्वत पर श्रीहरि की उपासना करते हुए अगस्त्य मुनि ने कही थी (श्लोक 35)।



यमराज अपने दूतों को आदेश देते हैं कि वे भगवद्भक्तों के निकट कभी न जाएँ, जो श्रीहरि की गदा से रक्षित और मृत्यु तथा काल की पहुँच से परे हैं (श्लोक 27-34)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. मृत्यु भी परमेश्वर के आगे नत होती है। यम खुले रूप से स्वीकारते हैं कि वे परम अधिकारी नहीं हैं: एक ही परमेश्वर इस सम्पूर्ण सृष्टि में वस्त्र के ताने-बाने के समान ओत-प्रोत व्याप्त हैं, इन्द्र, ब्रह्मा, शिव आदि प्रत्येक लोकपाल उनके सेवक मात्र हैं, और ये उन्नत नियन्ता भी, सत्त्वगुण में स्थित होते हुए भी, स्वीकारते हैं कि वे उनके गूढ़ अभिप्राय को नहीं जान सकते (श्लोक 12-18)।

2. सच्चा धर्म गुह्य है और दुर्लभ जनों को ही ज्ञात है। भक्ति-धर्म साक्षात् भगवान् द्वारा प्रणीत है और पूर्णतः केवल बारह महाजनों को ही ग्राह्य है, जो सब साधकों के विश्वसनीय मार्गदर्शक बनते हैं (श्लोक 19-21)।

3. भगवन्नाम से भक्ति सबका परम कर्तव्य है। कर्मकाण्ड और दर्शन से ऊपर भक्ति-योग है, जो सरलता से भगवान् के नाम के कीर्तन द्वारा किया जाता है (श्लोक 22)।

4. नाम अनजाने पुकारने वाले को भी मुक्त करता है। यम स्वयं अजामिल को इसका जीवन्त प्रमाण बताते हैं कि नाम की महिमा समस्त साधारण गणना से परे है (श्लोक 23-24)।

5. भगवान् के भक्त अलंघ्य हैं। श्रीहरि से रक्षित, वे यम तथा काल की पहुँच से परे हैं; स्वयं मृत्यु का स्वामी भी अपने दूतों को उनसे दूर रहने का आदेश देता है, और उस अपराध के लिए विनम्रतापूर्वक क्षमा माँगता है (श्लोक 27-30, 34)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस बात में एक शान्त गरिमा है कि यह उन्नत शिक्षा स्वयं मृत्यु के स्वामी यम के मुख से आती है। हम अपेक्षा कर सकते हैं कि दण्ड का देवता अपने अधिकार की रक्षा करेगा, नियम के अक्षर पर बल देगा। इसके विपरीत, वे हाथ जोड़कर भगवान् के आगे अपनी लघुता स्वीकारते हैं, उन भक्तों की स्तुति करते हैं जिन्हें वे कभी स्पर्श नहीं कर सकते, और अपने दूतों की तत्परता के लिए भगवान् से क्षमा तक माँगते हैं। यदि स्वयं मृत्यु भक्ति के आगे इतनी सहजता से नत होती है, तो हमें किसका भय? यम की शिक्षा समस्त नैतिक विश्व को नए सिरे से रचती है: सर्वोच्च उपलब्धि पुण्य का निर्दोष बहीखाता नहीं, अपितु प्रेम में भगवान् की ओर मुड़ा हुआ हृदय है। और उस प्रेम का द्वार आश्चर्यजनक रूप से सरल है — उनके नाम का कीर्तन, जो, उनके शब्दों में, “नाम आदि साधनों से” किया जाता है। मृत्यु के स्वामी ने, वस्तुतः, हमें वह एक प्रमाण-पत्र सौंप दिया है जिसे उनके अपने दूत भी चुनौती नहीं दे सकते। नाम को सच्चे मन से ग्रहण करना ही स्वयं को चुपचाप उनकी पहुँच से परे रख लेना है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, यम के अपने दूतों को दिए आदेश से प्रेरणा लें और भगवन्नाम को अपने लिए एक कर्तव्य नहीं, अपितु एक शरण-स्थल बनने दें। जब भी आपके मन में भय या चिन्ता उठे — भविष्य के विषय में, मृत्यु के विषय में, अपनी ही दुर्बलताओं के विषय में — रुकें और कोमलता से दोहराएँ: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” स्मरण रखें कि यह वही नाम है जिसके आगे स्वयं मृत्यु के दूत पीछे हट जाते हैं। आज इसे पूरा करने के कार्य के रूप में नहीं, अपितु एक ऐसे आश्रय के रूप में साथ रखें जिसमें आप किसी भी क्षण प्रवेश कर सकते हैं।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का तृतीय अध्याय अजामिल की कथा को एक अकेले चमत्कार से उठाकर एक सार्वभौमिक शिक्षा बना देता है। मृत्यु के स्वामी यम की विनम्र स्वीकृति और प्रेममय उपदेश के द्वारा हम जानते हैं कि एक ही परमेश्वर सबका शासन करते हैं, कि सच्चा धर्म भक्ति का गुह्य मार्ग है जिसे बारह महान् अधिकारी जानते हैं, और कि भगवान् के नाम का कीर्तन प्रत्येक आत्मा का परम कर्तव्य तथा सुनिश्चित शरण है। सबसे मार्मिक रूप से, हम जानते हैं कि भगवान् के भक्त मृत्यु और काल की पहुँच से परे हैं, स्वयं श्रीहरि द्वारा रक्षित — इतने पूर्णतः कि यम अपने ही दूतों को उनके निकट कभी न जाने का आदेश देते हैं और प्रयास करने के लिए भगवान् से क्षमा माँगते हैं। जैसे-जैसे यह स्कन्ध आगे बढ़ता है, हम सबसे अप्रत्याशित शिक्षक से यह देदीप्यमान आश्वासन साथ ले चलते हैं: कि भगवान् के लिए प्रेम, उनके नाम के द्वारा व्यक्त, वह एक शक्ति है जिसके आगे स्वयं मृत्यु भी स्थिर हो जाती है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, तृतीय प्रवचन।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-6-adhyay-3-yamaraj-apne-dooton-kopadesh-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट